सेर्गेई मिखाल्कोव

मुसीबत का साथी

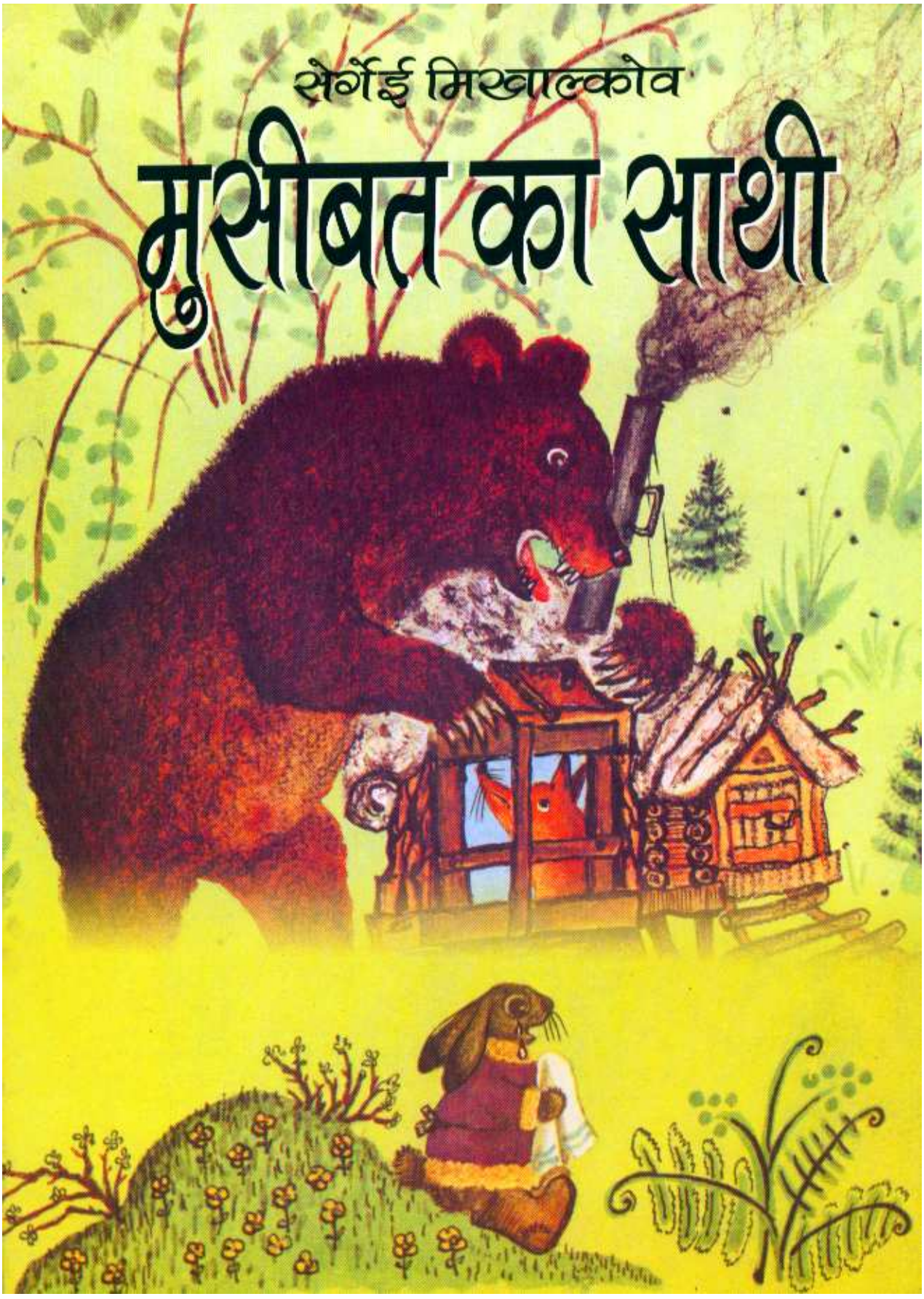

मुसीबत का साथी

सेर्गेई मिखाल्कोव

हिन्दी रूपान्तर : नमिता
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 15 रुपये

पहला हिन्दी संस्करण : जनवरी, 2008

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

मुसीबत का साथी

विशालकाय भालू एक नन्हे खरगोश को बिना वजह धकियाता रहता था। एक दिन उसने उसे पकड़ा और उसके कान पर एक घूँसा जड़ दिया, खरगोश का एक कान मुड़ा ही रह गया।

बेचारा खरगोश लगातार रोता रहा। आखिरकार उसके कान दुखने बन्द हो गए और उसके आँसू भी सूख गए, लेकिन फिर भी वह आहत महसूस कर रहा था। आखिर उसने किया क्या था? भालू से वह फिर कभी निपट लेगा! काश उसके कान ना चोटिल हुए होते!

लेकिन वह मदद के लिए किसके पास जायेगा? भालू जंगल का सबसे ताकतवर जानवर था। भेड़िया और लोमड़ी उसके बहुत अच्छे दोस्त थे, वे हमेशा भालू का ही साथ देंगे।

"कौन मेरी मदद कर सकता है?" खरगोश ने आहें भरते हुए कहा।

"मैं कर सकता हूँ।" किसी ने चिल्लाकर कहा। खरगोश ने अपनी बाँयी आँख उठाई और उसे एक मच्छर दिखा।

"तुम कैसे मदद कर सकते हो?" उसने कहा। "तुम भालू का क्या बिगाड़ सकते हो? वह बहुत बड़ा है और तुम बहुत ही छोटे। तुम इतने ताकतवर भी नहीं हो।"

"बस देखते जाओ!" मच्छर ने कहा।

भालू पूरे दिन गर्म जंगल में मारा-मारा फिर रहा था। वह बहुत थका और अलसाया हुआ था और रसभरी के पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। लेकिन जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द की उसे अपने कान में कोई भनभनाहट सुनाई पड़ी : "भन-भन-भन-भन!"

भालू समझ गया कि यह मच्छर गा रहा है। उसने अपनी साँस रोक ली और इन्तजार करने लगा कि कब मच्छर उसकी नाक पर बैठे। मच्छर उसके चारों ओर मँडराता रहा और आखिरकार भालू की नाक के एकदम सिरे पर बैठ गया। भालू अपने बायें पंजे पर उछला और अपनी नाक पर एक तमाचा मारा अब जरूर मच्छर को एक सबक मिलेगा।

भालू अपनी दाहिनी ओर झुका, आँखें बन्द की और बस जम्हाई ले ही रहा था कि उसे फिर भनभनाहट सुनाई पड़ी "भन-भन-भन-भन!"

मच्छर उस समय दूर जा चुका होगा! भालू ने अपनी साँस रोकी और सोने का नाटक करता हुआ वहीं पड़ा रहा, जबकि वह पूरे समय ध्यान लगाये हुए था और ताक में था कि मच्छर अब किस नई जगह पर बैठता है। मच्छर भनभनाता रहा, भनभनाता रहा फिर अचानक रुक गया।

"क्या बात है!" भालू ने खुद से कहा और अँगड़ाई ली। लेकिन मच्छर एकदम धीरे से भालू के कान पर बैठा और अन्दर रेंगता चला गया। वह उसे कैसे मारे? भालू उछल पड़ा। उसने अपने दाँयें पंजे पर उछलकर अपनी ही कान पर इतनी जोर का थप्पड़ मारा कि उसे दिन में तारे नजर आने लगे! अब मच्छर से हमेशा के लिए फुरसत हो गई।

भालू ने अपने कान को रगड़ा और आराम से बैठ गया। अब वह सो सकेगा, लेकिन जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द की, उसे फिर वही पुरानी भनभनाहट सुनाई पड़ी, "भन-भन-भन-भन!"

अब और नहीं! कैसा दुष्ट कीड़ा है!

भालू बड़बड़ाता हुआ उठा और उस जगह से भाग गया जहाँ वह मच्छर के शिकंजे में था। वह लड़खड़ाता हुआ झाड़ियों को पार करता जा रहा था और इतनी जोर से जम्हाई ले रहा था कि उसके जबड़े कड़कड़ाने लगते थे। लगभग सोता हुआ वह भागा जा रहा था, लेकिन मच्छर उसके ठीक पीछे था—"भन-भन-भन-भन!"

भालू दौड़ने लगा। वह तब तक दौड़ता रहा जब तक कि बुरी तरह थककर झाड़ी के नीचे नहीं गिर पड़ा। वहीं लेटकर वह जोर-जोर से साँस लेने लगा और अपने कान को मच्छर के हवाले छोड़ दिया।

जंगल एकदम शान्त, घनघोर अँधेरा! सारे जानवर और पक्षी मजे से खर्राटे ले रहे थे। केवल भालू जग रहा था। थककर लगभग वह बेहोशी की हालत तक पहुँच गया था।

"क्या मुसीबत है!" भालू ने खुद से कहा। इस बेवकूफ मच्छर ने मुझे इतना उलझा दिया कि मैं अपना नाम तक भूल गया हूँ। मैं खुश हूँ कि खुद को बचा पाया। अन्ततः अब मैं थोड़ा सो सकता हूँ।

भालू एक लम्बी भूरी झाड़ी के अन्दर चढ़ गया। उसने अपनी आँखें बन्द की और ऊँघने लगा। वह सपना देखने लगा कि वह जंगल में है। अचानक उसकी नजर मधुमक्खी के छत्ते पर पड़ी, जो पूरी तरह शहद से भरा हुआ था। वह अभी मधुमक्खी के छत्ते को अपने पंजे से पकड़ने ही जा रहा था कि फिर उसे वही भनभनाहट सुनाई पड़ी : "भन-भन-भन-भन!"

मच्छर ने उसे पकड़ लिया और आखिरकार उसे जगा दिया।

भालू बैठ गया और कराहने लगा। इस दौरान मच्छर उसके सिर के चारों ओर गोल-गोल घूमता रहा। कभी एकदम पास आ जाता, कभी दूर चला जाता, कभी बहुत जोर-जोर से भन-भन करने लगता, कभी बिल्कुल धीमे-धीमे। अचानक वह एकदम रुक गया। क्या मच्छर

गायब हो गया?

भालू ने थोड़ी देर इन्तजार किया, फिर वह झाड़ी में और अन्दर रेंग गया और अपनी आँखें बन्द कर ली। वह अभी झपकी ले ही रहा था कि मच्छर ने फिर हमला बोल दिया : "भन-भन-भन-भन!"

भालू रेंगते हुए झाड़ी से बाहर निकला और रोने लगा।

"तुम चाहते क्या हो, बूढ़े मच्छर? मुझे लगता है तुम्हारी मौत निश्चित है! ठहर जा बच्चू! अब मैं चाहे एक झपकी भी ना ले सकूँ, परवाह नहीं पर तेरी खैर नहीं!"

जब तक सूरज नहीं निकल आया मच्छर भालू को इधर-उधर दौड़ाता रहा। उसने भालू की हालत एकदम पतली कर दी। उस रात भालू एक पल भी आराम ना कर सका। वह मच्छर को पकड़ने में अपने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया और खुद को बुरी तरह मारता रहा।

सूरज उग आया। पशु-पक्षी मीठी नींद से जागे। वे गा रहे थे और खुशी से उछल रहे थे। केवल भालू में ही नए दिन की शुरुआत की ताजगी नहीं थी।

उस सुबह खरगोश जंगल के किनारे भालू से मिला। झबरा भालू लड़खड़ा रहा था, अपने ही पैरों पर नियंत्रण नहीं था। बड़ी मुश्किल से वह अपनी आँखें खोल पा रहा था। वह बहुत उनींदा था। खरगोश खूब हँसा, और हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।

"बहुत खूब मच्छर; बहुत खूब! पर तुमने ऐसा किया कैसे?"

"मैं अकेला नहीं था," मच्छर ने जवाब दिया। "वहाँ हम बहुत सारे थे और हम कहते हैं कि सब एक पर भारी और एक सब पे भारी। हमें कोई नहीं हरा सकता।"

और वह उड़ गया : "भन-भन-भन-भन!"

गहरी चोट

किसी समय एक भेड़िया था जो अपनी माँद में अकेला ही रहता था। ज़िन्दगी भर उसने इसकी सफाई या मरम्मत नहीं की थी। यह उतना गंदा और पुराना दिखाई देता था कि ऐसा लगता था जैसे यह किसी भी क्षण ढह सकता है।

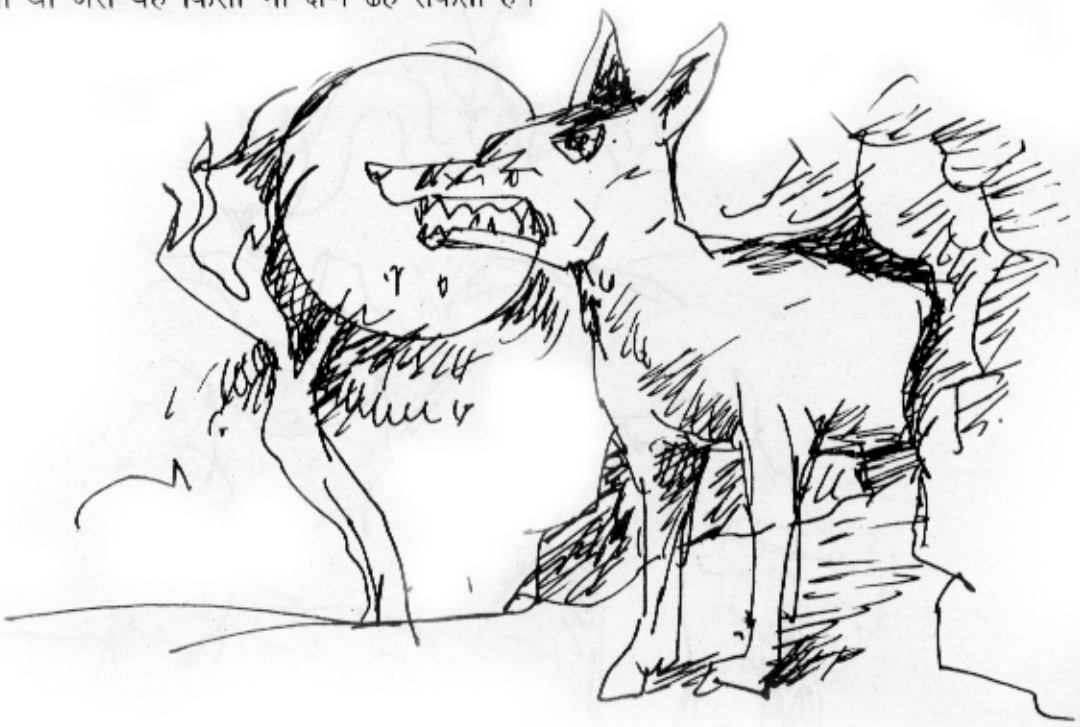

एक दिन एक हाथी उस भेड़िए की माँद की ओर से गुजर रहा था कि उसकी छत को एक हल्का सा धक्का लग गया। बस, इतना ही काफी था। पूरी माँद तिरछी हो गई।

"ओह प्यारे! कृपया मुझे क्षमा कर दो, मेरे दोस्त!" हाथी ने भेड़िए से कहा—"मेरा इरादा यह नहीं था, मैं अभी इसकी मरम्मत कर देता हूँ।"

हाथी हर काम कर लेता था और काम करने में शरमाता नहीं था। हाथी ने हथौड़ा और छेनी लिया और उसने छत को ठीक कर दिया। अब वह पहले से बेहतर दिखाई दे रही थी।

"ओ-हो," भेड़िए ने सोचा। "ऐसा लगता है कि हाथी मुझसे डर गया है। पहले उसने मुझसे कहा कि मुझे माफकर दो और फिर उसने मेरे छत की मरम्मत की। चलो, उससे नया घर बनवाते हैं। अगर वह मुझसे डर गया है, तो मेरी बात जरूर मानेगा।

"रुक! रुक!" उसने हाथी को पुकारकर कहा। "यह क्या बात हुई? तुम क्या सोचते हो कि तुम्हें इतनी आसानी से छुटकारा मिल जायेगा? तुमने पहले मेरे घर की छत को गिरा दिया फिर काँटी लगाकर पुराने गड्ढे में ठोंक दिया और अब भाग रहे हो? मेहरबानी करके मेरे लिए नया घर बना दो। और अब वहाँ रुके न रहो वरना मैं तुम्हें ऐसा सबक दूँगा, जिसे तुम कभी भी नहीं भूल पाओगे?

हाथी कुछ नहीं बोला : उसने चुपचाप अपनी सूँड़ को भेड़िए को कमर में लपेटा और उछालकर बदबूदार पानी में फेंक दिया, पिफर वह भेड़िए की माँद पर बैठ गया।

"यह है तुम्हारा नया घर!" हाथी ने भेड़िए से कहा और चला गया।

"मैं कुछ भी नहीं समझ पर रहा हूँ" धीरे-धीरे होश में आने पर चकित भेड़िए ने कहा। "हाथी पहले मुझसे डरा, माफी माँगी, फिर गया और यह कर दिया। नहीं, नहीं, वाकई मैं अब भी कुछ नहीं समझा।"

"अरे, मूर्ख!" बूढ़ा काला कौवा चिल्लाया जो सबकुछ देख रहा था। "तुम कायरता और भलमनसाहत के बीच के अन्तर को नहीं समझते?

आईना

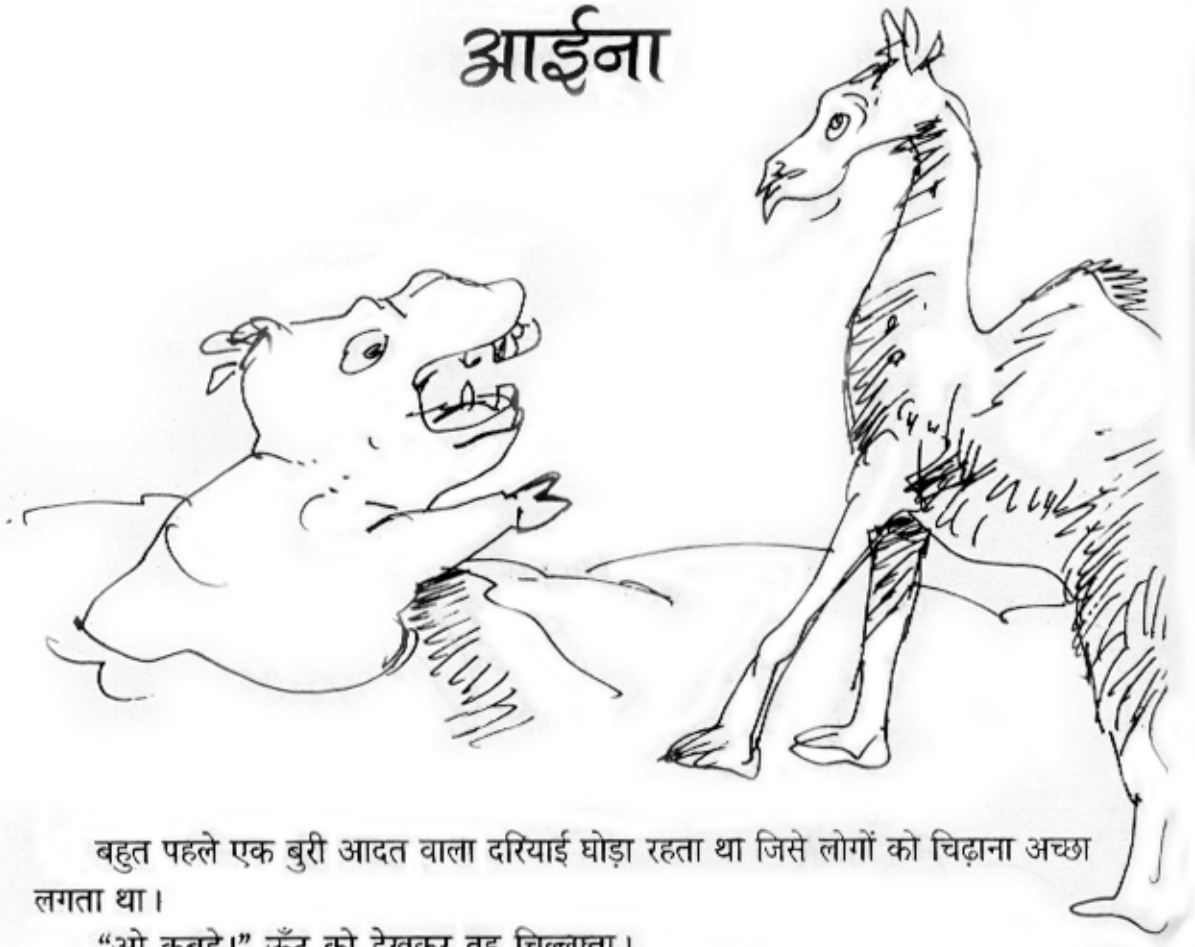

बहुत पहले एक बुरी आदत वाला दरियाई घोड़ा रहता था जिसे लोगों को चिढ़ाना अच्छा लगता था।

"ओ कुबड़े!" ऊँट को देखकर वह चिल्लाता।

"कौन कुबड़ा? मैं?" ऊँट गुस्से से कहता।

"वाह, अगर मेरे तीन कूबड़ होते तो मैं और भी ज्यादा सुन्दर दिखता!"

"ऐ मोटू!" वह हाथी को आवाज देता। "तुम्हारा अगवाड़ा किस तरफ है और पिछवाड़ा किस तरफ है? वे दोनों तो एक जैसे दीखते हैं!"

अच्छे स्वभाव वाला हाथी खुद से कहता, "मैं हैरान हूँ कि वह मुझे क्यों तंग कर रहा है? मैं अपनी सूँड़ को पसन्द करता हूँ और यह मेरी पूँछ की तरह नहीं दिखाई देती है।"

"सेम की डण्डी!" कहकर वह ज़िराफ के ऊपर हँसता।

"अजीब रंगरूप वाले तो तुम हो," ज़िराफ दरियाई घोड़े को नीचे से ऊपर तक देखते हुए कहता—"खुद को कभी देखा है?"

सभी जानवरों को एक आइना मिल गया और वे दरियाई घोड़े को ढूँढ़ने निकल पड़े। उस समय वह शुतुरमुर्ग को चिढ़ाते हुए कह रहा था—

"ऐ नुचे हुए नंगी टाँगों वाले जीव! तुम्हें पक्षी माना जाता है लेकिन तुम तो उड़ ही नहीं सकते।"

शुतुरमुर्ग इतना दुःखी हो गया कि उसने अपना सिर रेत में धँसा लिया।

"ऐ, सुन" ऊँट ने उसके पास जाकर कहा। क्या तुम सोचते हो कि तुम बहुत सुन्दर हो?''

"निश्चय ही," दरियाई घोड़े ने जवाब दिया। "इसमें क्या शक है?"

"ठीक है, तुम खुद को देख लो!" और हाथी ने उसके हाथ में आइना पकड़ा दिया।

दरियाई घोड़े ने आईने में देखा और हँसना शुरू कर दिया।

"हा-हा-हा! हो-हो-हो! कौन है यह बदसूरत जीव?"

जैसे-जैसे वह आइने में खुद को देखता जा रहा था, और हँसकर बात को टालता जा रहा था कि हाथी, ज़िराफ, ऊँट और शुतुरमुर्ग ने यकायक महसूस किया कि वास्तव में दरियाई घोड़ा बुरी तरह हक्का-बक्का रह गया है।

उस दिन से उन लोगों ने उसके कटाक्षों पर ध्यान देना छोड़ दिया।

जैसे को तैसा

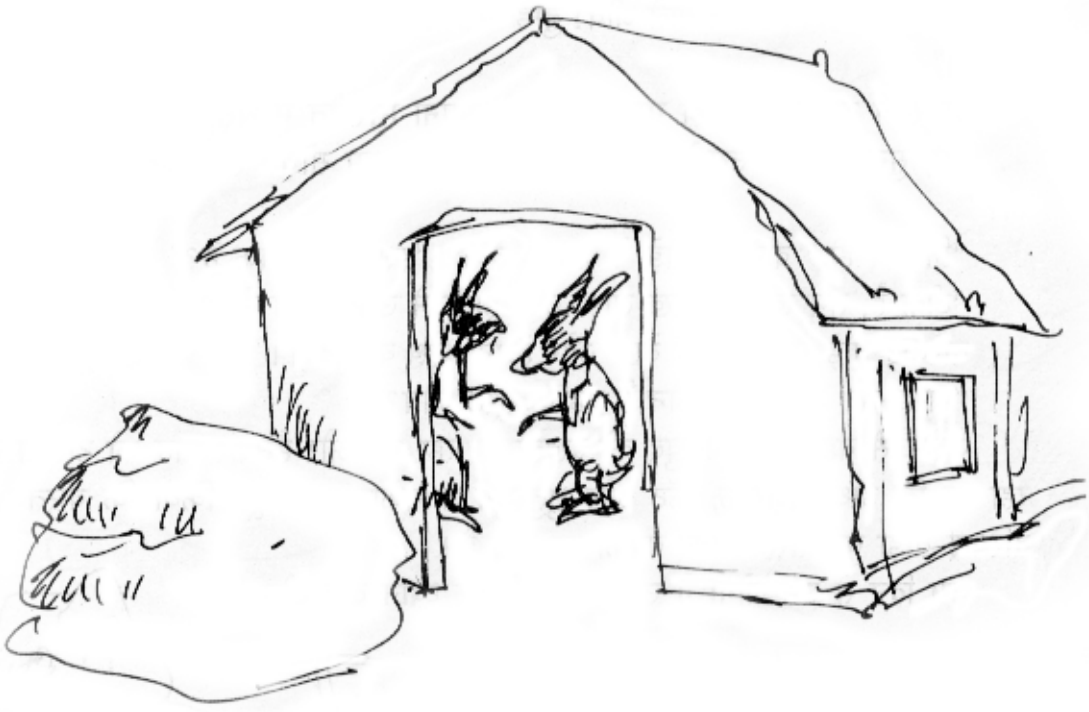

खरगोश और उसकी पत्नी ने जंगल में अपने लिए एक छोटा-सा घर बनाया। उन्होंने झाड़ू बुहारू करके मैदान को साफ किया। अब उनके लिए एक बड़ा काम बचा था—रास्ते में पड़े हुए बड़े चट्टान को हटाना।

"चलो हम मिलकर धक्का देते हैं और उसे रास्ते से हटा देते हैं," खरगोश की पत्नी ने कहा।

"क्यों परेशान होती हो?" खरगोश ने कहा, "उसे वहीं पड़े रहने दो, अगर किसी को जाना होगा तो वह उसके किनारे से जा सकता है।"

और इस तरह चट्टान उनके बिल्कुल सामने कुछ दूरी पर पड़ा रहा।

एक दिन खरगोश बगीचे से उछलते-कूदते हुए घर आ रहा था और भूल गया कि रास्ते में एक चट्टान पड़ा हुआ है। वह बुरी तरह लड़खड़ाकर गिर गया और उसकी नाक टूट गई।

"चलो, पत्थर को हटा दें," उसकी पत्नी ने फिर कहा। "देखो, तुमने खुद को कितना चोटिल कर लिया।"

"तो क्या!" खरगोश ने कहा। "कोई ज्यादा चोट नहीं लगी है।"

थोड़ी देर बाद खरगोश की पत्नी एक बर्तन में गर्म सूप लेकर आई और उसे बाहर टेबल पर रख दिया। खरगोश अधैर्य से अपनी चम्मच टेबल पर खड़खड़ा रहा था, वह खरगोश को देखने लगी और सामने पड़े चट्टान के बारे में भूलकर उससे टकरा गई जिससे सूप बिखर गया और वह जल गयी। पत्थर उनके लिए एक ऐसी मुसीबत बन गया, जिसका कोई अन्त नहीं था।

"चलो इस पुराने पत्थर को हटा दें खरगोश!" पत्नी ने विनती की। "अनजाने में किसी का भी सिर इससे टूट सकता है।"

"उसे वहीं पड़े रहने दो, जहाँ वह है!" अड़ियल खरगोश ने जवाब दिया।

एक दिन खरगोश और उसकी पत्नी ने अपने पुराने दोस्त मीशा को डिनर (रात के भोजन) पर बुलाया।

"हाँ, मुझे खुशी होगी," भालू ने कहा, जब उसे आमंत्रित किया गया। "तुम केक बना लेना और मैं थोड़ी शहद लेता आऊँगा।"

जब खरगोश दम्पत्ति ने अपने मेहमान को आते देखा तो वे उससे मिलने पोर्च पर चले गए। मीशा शहद के पीपे को अपने सीने और दोनों पंजों से चिपटाये हुए जल्दी-जल्दी चला आ रहा था। वह सामने देखते हुए नहीं चल रहा था।

खरगोश दम्पत्ति ने हाथ हिलाते हुए चिल्लाया, "पत्थर! उधर देखो पत्थर!"

भालू समझ नहीं पा रहा था कि वे क्या इशारा कर रहे हैं और क्या चिल्ला रहे हैं। इसके पहले कि वह समझ पाता पत्थर से टकरा गया और बुरी तरह कलाबाजी खाते हुए धड़ाम से खरगोश के घर के सामने गिर पड़ा।

पीपा टूट गया और उसके इर्द-गिर्द घर भी धड़धड़ाते हुए गिर पड़ा।

यह सब देखकर भालू दहाड़ उठा। दोनों खरगोश रो रहे थे।

लेकिन अब रोने का क्या मतलब था? यह उनकी ही गलती थी!

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ